एहि अन्नपूर्णे

रागम्: पुन्नागवराळि ताळम्: आदि

पल्लवि

एहि अन्नपूर्णे सन्निधेहि सदा पूर्णे सुवर्णे

अनुपल्लवि

पाहि पञ्चाशद्वर्णे श्रियं देहि रक्तवर्णे अपर्णे

चरणम्

काशीक्षेत्रनिवासिनि कमललोचनविशालिनि
विश्वेशमनोल्लासिनि जगदीशगुरुगुहपालिनि

मध्यमकाल साहित्यम्

विद्रुमपाशिनि पुन्नागवराळिप्रकाशिनि

षड्त्रिंशत्तत्वविकासिनि सुवासिनि
भक्तविश्वासिनि चिदानन्दविलासिनि

◇ ◇ ◇ ◇ ◇ ◇ ◇ ◇ ◇ ◇